P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिता एवं आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता मीणा
अनुसंधानकर्ता शिक्षा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर

सारांश

शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है जिससे प्राणी अपने व्यवहार में उत्तरोत्तर परिवर्तन करता है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं आदर्षों व दर्शन के अनुरूप विशिष्ट शैक्षिक व्यवस्था की संरचना करता है जिसका मुख्य उद्देश्य होता है – राष्ट्रीय संस्कृति के अनुरूप व्यक्ति का निर्माण। इस उद्देश्य की प्राप्ति कोई साधारण कार्य नहीं है क्योंकि व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि व्यक्ति के वैयक्तिक गुण, आत्मप्रत्यय, आकांक्षाऐं, दुश्चिताऐं आदि शिक्षा के प्रति उसके दृष्टिकोण को प्रभावित करते है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति की दुश्चिताएं, आकांक्षाऐ, आत्मप्रत्यय आदि उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति से भिन्न हो सकती है क्योंकि विभिन्न स्तरो पर शिक्षा के उद्देश्यों में भिन्नता होती है। विद्यालय चाहे सरकारी हो या निजी ये बालकों को एक विशेष वातावरण प्रदान करते हैं यह वातावरण शुद्ध सरल एवं सुव्यवस्थित होता है जहां बालक निरन्तर प्रगति करता हैं अगर बालक विद्यालय में ठीक से समायोजित नही हो पाता है या उसे निरन्तर भय व चिंता सताती है तो वह अध्ययन व शैक्षिक प्रगति नहीं कर पाता तथा इसके पीछे विद्यालय के विभिन्न घटक तथा सम्पूर्ण वातावरण का दूषित होना मुख्य कारण माना जायेगा।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय संस्कृति, प्राथमिक शिक्षा, आत्मप्रत्यय

प्रस्तावना

बालक की विभिन्न शारीरिक व मानसिक आवश्यकताऐं उसे क्रियाषील बनाती है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति विद्यालय में आयोजित होने वाली विभिन्न शैक्षणिक व अन्य क्रियाओं के माध्यम से करना चाहता है। बालक की शैक्षणिक आवश्यकताओं व अन्य पाठयेत्तर क्रियाओं की पूर्ति कभी सरल ढंग से हो जाती है तथा कभी उसकी इस पूर्ति में बाधा आ जाती है या समय अधिक लग जाता है तो उसमें दुश्चिताएं उत्पन्न हो जाती है, वह निराश हो जाता है तथा उसके आत्मप्रत्यय पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे सम्पूर्ण व्यक्तित्व कुसमायोजित हो जाता है। अगर विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता विद्यालयों का स्नेहयुक्त वातावरण व अध्यापकों का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार होने पर बालक अपने आप को समायोजित करके निरन्तर बिना भय व दुश्चिंता के प्रगति करता है। ऐसे विद्यालयों में अगर उसके लक्ष्य प्राप्ति में कुछ बाधा भी आती है तो वह उनके साथ समायोजन करता हुआ सफलता प्राप्त करता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग ने बालको के सामने अनेक समस्याऐं उत्पन्न की हैं प्रतिस्पर्धा में टिके रहना तथा सफलता के लिए व्यक्ति का अपना आत्मप्रत्यय का संतुलन तथा दुश्चिताओं से मुक्त रहना आवश्यक है। कभी–कभी यह देखा जाता है कि सफलतम व्यक्ति जो अपनी सफलता के चरम पर होते हुए भी आत्महत्या जैसे घोर अनावश्यक कदम उठा लेते है। ऐसा क्यों ? वे अपनी सफलता को पचा नहीं पाते या ओर अधिक महत्वकांक्षी हो जाते है। वे अपने स्वबोध या आत्मप्रत्यय को नहीं पहचान पाते तथा ना ही आत्मप्रत्यय का उचित ध्यान रख पाते। इसके साथ ही क्या सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थी दुश्चिता एवं आत्मप्रत्यय में विभिन्नता रखते है। इसी दृष्टि से उपर्युक्त अध्ययन किये जाने का विचार किया गया।

साहित्यावलोकन

दुश्चिंता एवं आत्मप्रत्यय पर किये गये विभिन्न शोधकार्यों में महफुज (1972) के अनुसार दुश्चिता का आयु के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है। निम्यावन (1972) के अनुसार ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक चिंतित रहते है। इसी प्रकार निम्न आय वर्ग के विद्यार्थी उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक दुश्चिता रखते है। डागर (1982) ने शोध से

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ज्ञात किया कि विभिन्न दुश्चिता रत्तर रखने वाले विद्यार्थी अलग अलग प्रकार से चिन्तन नही रखते। त्यागी (1995) के अध्ययन से पता चलता है कि विज्ञान वर्ग के छात्र वाणिज्य एवं कलां वर्ग के छात्रों की तुलना में दुश्चिता से ग्रसित है। जोशी (2003) के अनुसार ग्रामीण परिवेष के विद्यार्थी पाठ्यक्रम के प्रति अधिक चिंतित रहते है। खोसरवी (2005) के आत्मप्रप्यय एवं दुश्चिता के बीच सम्बन्ध के अध्ययन में पाया कि किशोर विद्यार्थियों के आत्मप्रप्यय एवं दुश्चिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। उनके अनुसार भारतीय लड़कियों व लड़कों के आत्मप्रप्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। मेते (2010) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि छात्र एवं छात्राओं के आत्मप्रप्यय, दुश्चिता एवं शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। रस्तोगी (2012) के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुश्चिता एवं शैक्षिक स्थिति में सार्थक संबंध होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिंता का अध्ययन करना।
2. सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन करना।
3. सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के दुश्चिताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्राओं की दुश्चिताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन मे जोधपुर जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों के कुल 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। सरकारी विद्यालयों के 100 विद्यार्थी (50 छात्र एवं 50 छात्राऐं) तथा निजी विद्यालयों के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राऐं) विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

विस्तृत दुश्चिता परीक्षण

डॉ. हरीश शर्मा, डॉ. राजीव लोचन भारद्वाज एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण।

आत्मप्रत्यय (स्वधारणा) प्रश्नावली

डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु मध्यमान, प्रमापविचलन एवं टी–मूल्य आदि सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ों का विश्लेषण कर सार्थकता को परिकल्पनानुसार निम्न सारणीयों में प्रस्तुत किया गया है –

परिकल्पना – 1

सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिंता मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या – 1

समूह	न्यादर्ष (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
सरकारी विद्यालय	50	46.18	9.7	1.27	असार्थक
निजी विद्यालय	50	43.75	10.3		

सारणी संख्या 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिताओं का मध्यमान 46.18 एवं प्रमाप विचलन 9.7 है जबकि निजी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिताओं का मध्यमान 43. 75 एवं प्रमाप विचलन 10.3 है। सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिताओं के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जांचने हेतु प्राप्त टी–मूल्य 1.27 है जो कि 0.05 विश्वासस्तर के सारणी मान 1.96 से कम है जो कि असार्थक है अर्थात् सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 2

सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिता मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या – 2

समूह	न्यादर्ष	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
सरकारी विद्यालय	50	38.92	8.80	1.75	असार्थक
निजी विद्यालय	50	42.50	11.50		

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिंताओं का मध्यमान 38.92 एवं प्रमाप विचलन 8.80 है जबकि निजी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिताओं पर प्राप्त मध्यमान 42.50 एवं प्रमाप विचलन 11.50 है। सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिताओं के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जांचने हेतु प्राप्त टी–मान 1.75 है जो कि 0.05 विश्वासस्तर के सारणी मान 1.96 से कम है जिसके आधार पर हम कह सकते है कि सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 3

सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या – 3

समूह	न्यादर्ष	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
सरकारी विद्यालय	50	155.7	20.18	0.62	असार्थक
निजी विद्यालय	50	158.5	24.16		

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय पर प्राप्त मध्यमान 155.7 एवं प्रमाप विचलन 20.18 है जबकि निजी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय परीक्षण पर प्राप्त मध्यमान 158.5 एवं प्रमाप विचलन 24.16 है। सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय पर प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जांचने हेतु प्राप्त टी–मान 0.62 है जो कि 0.05 विश्वासस्तर के सारणी मान 1.96 से कम है जिसके आधार पर हम कह सकते है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 4

सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या – 4

समूह	न्यादर्ष	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
सरकारी विद्यालय	50	157.53	21.50	2.83	सार्थक
निजी विद्यालय	50	170.58	24.5		

सारणी संख्या 4 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय पर प्राप्त मध्यमान 157.53 एवं प्रमाप विचलन 21.50 है जबकि निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय पर प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान 170.58 एवं प्रमाप विचलन 24.5 है। मध्यमान के आधार पर निजी विद्यालयों की छात्राऐं सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की तुलना में अधिक स्वधारणा रखती है। सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय पर प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जांचने हेतु प्राप्त टी–मूल्य 2.83 है जो कि 0.05 विष्वास स्तर के सारणी मान 1.96 से अधिक है जिसके आधार पर हम कह सकते है कि सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन से पता चलता है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिंताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिताओं में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों के आत्मप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अन्तर होता है।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में दुश्चिंता को लेकर कोई विभिन्नता नही है जबकि ऐसा माना जाता है कि शैक्षणिक दृष्टि से निजी विद्यालयों के विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक दुश्चिंता रखते है क्योंकि निजी विद्यालयों में षिक्षकों के पास उचित शैक्षणिक योग्यता नहीं होती तथा विद्यालयों में भी अन्य शैक्षणिक क्रियाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

परिणामों के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आत्मप्रत्यय में विभिन्नता देखने को मिली जिसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि निजी विद्यालयों की छात्राऐं सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की तुलना में अपने स्वयं के प्रति अधिक जागरूक है तथा उन्हें अपने अस्तित्व के बारे में पूर्ण ज्ञान है। सरकारी विद्यालयों में उचित मार्ग निर्देषन के अभाव में यह हो सकता है कि उनके आत्मप्रत्यय का उचित विकास नहीं हुआ हो।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *खोसरवी, मासोमेह (2005) ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटविन सेल्फकॉन्सेप्ट एण्ड एंजाइटी एमोंग एडोलसेन्स स्टूडेन्टस. पीएच.डी. एजूकेशन, पूणे यूनि.*
2. *बुच, एम – बी (1978 – 1983) – थर्डसर्वे इन एजूकेशन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।*
3. *बुच, एम – बी (1983 – 1988) – फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।*
4. *कपिल, एच के (1999) अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 सप्तम संस्करण, पेज सं. 45–200.*
5. *महफुज अन्सारी (1972) ए स्टडी ऑफ एंजाइटी एमोंग स्कूल एण्ड कॉलेज स्टूडेन्टस इंडियन जनरल ऑफ साइकोलोजी पार्ट–2 वो.47 पेज 187.*
6. *मेते जयन्त (2010) ए स्टडी ऑफ सेल्फकॉन्सेप्ट, एंजाइटी एण्ड एकेडेमिक अचिवमेन्ट एमोंग एडोलसेन्ट, एजूकेशन हेरॉल्ड वो. 39(1) पेज 5–10.*
7. *निझावन, एच.के. (1972) एंजाइटी इन स्कूल चिल्ड्रन नई दिल्ली : वौली इस्टर्न प्रा.लि. पेज 72.*
8. *भारद्वाज, आर एल शर्मा, एच एवं महेश भार्गव (2006) मेनुवल फॉर कॉम्प्रेहेन्सिव एंजाइटी टेस्ट (सी. ए. टेस्ट) नेशनल साइकोलोजिकल कॉरपोरेशन, आगरा पेज सं. 1–15.*
9. *सारस्वत राजकुमार (1988) 'आत्मप्रत्यय प्रश्नावली' नेशनल साइकोलोजिकल कॉरपोरेशन आगरा, पेज सं. 1–10.*
10. *डागर बी.एस. (1982) ए स्टडी ऑफ रिलेषनषिप बिटविन एंजाईटी एण्ड क्रियेटिव थिकिंग. पीएच.डी. शिक्षा, दिल्ली यूनिवर्सिटी*
11. *अस्थाना, बी (1980) मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पेज सं. 23–58*
12. *गैरेट, हेनरी ई. (2011) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पेज 33–230.*